पाठ–6

मनोहर

मैं बिलासपुर की एक घनी बस्ती के बीच खड़ा था। बहुत वर्षों बाद इस नगर में आने का अवसर मिला। चारों ओर देखा, दस वर्ष में कितना परिवर्तन हो गया था? बस्ती के लोगों के चेहरे जाने–पहचाने थे लेकिन समय की मार से वे चेहरे बूढ़े हो गए थे।

मेरी निगाहें बस्ती के बीच चाय के उस ठेले को ढूँढ़ रही थीं, जो उन दिनों एक चाय की दुकान थी। आज वहाँ एक पक्का मकान बन चुका था। हाँ, मकान के नीचे फुटपाथ से लगे एक छोटे से केबिन को देखकर मेरी दृष्टि एक पल के लिए ठिठकी।

हाँ! वही चाय का ठेला आज साफ़–सुथरा केबिन बन गया था। बिलासपुर छोड़ने के बाद मैं सपरिवार जनकनगर के अपने पुश्तैनी घर में बस गया था। आज इतने वर्षों बाद एक पारिवारिक समारोह में सम्मिलित होने आया था। न जाने क्यों बरसों पुराना चाय का ठेला मुझे बिलासपुर की पुरानी बस्ती में खींच लाया था।

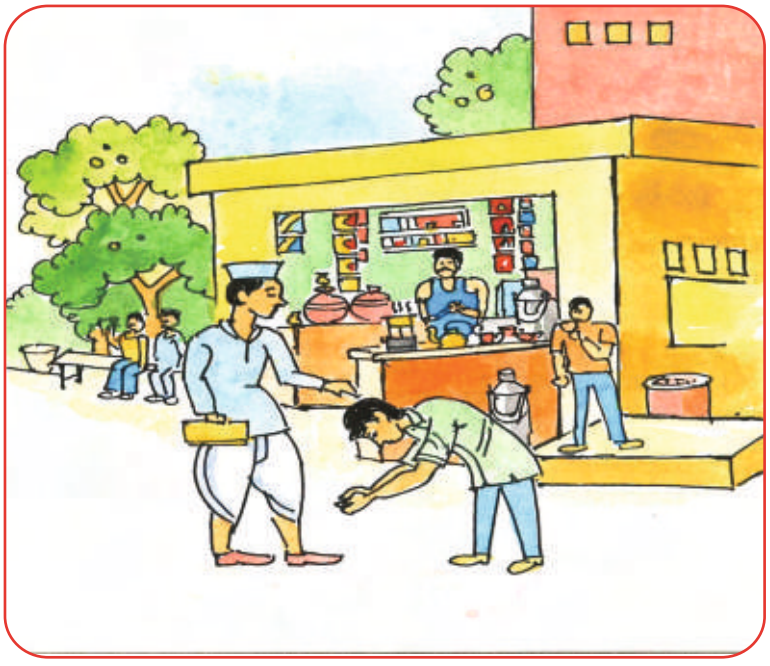

केबिन पर चाय बनाते एक युवक को देखकर मेरे पैर बरबस उसकी ओर बढ़ गए, ''क्या तुम मनोहर नाम के किसी व्यक्ति को जानते हो ?''

युवक ने चाय को प्यालों में डालते हुए पूछा, ''बाबूजी! किस मनोहर के लिए पूछ रहे हैं, आप?'' मुझे आवाज पहचानी–सी लगी। ध्यान से देखा, युवक अपनी मस्ती में खोया, चाय बनाने में मशगूल था। चेहरा भोला–भाला, आँखों में बचपन जैसे अभी भी झूल रहा था। ललाट पर खिंची रेखाएँ चेहरे की मासूमियत के साथ मेल नहीं खा रही थीं। वे बता रही थीं कि कैसे कच्ची उम्र, अनुभव और जीवन के थपेड़ों से गंभीर हो जाती हैं।

मैंने सभ्रम पूछा, ''मैं उस मनोहर की बात कर रहा हूँ, जो कभी यहाँ चाय के ठेले पर काम करता था।'' यह सुनकर युवक की आँखें चमक उठीं, ''बाबूजी! कहीं आप वे तो नहीं जो वर्षों पहले यहाँ चाय पीने आते थे।''

''हाँ! तुमने ठीक पहचाना। तो तुम ही मनोहर हो।''

मनोहर ने झुककर मेरे पैर छू लिए। मेरे लिए समझने को इतना ही पर्याप्त था। बचपन के मनोहर की विनम्रता आज और भी घनीभूत हो गई थी।

मुझे बीते समय की याद आने लगी। तब मनोहर चाय की दुकान पर काम करता था। गज़ब की फुर्ती थी उसमें। इस कार्य को करने के लिए किसी की बाध्यता नहीं थी।

सुबह–शाम की मेहनत के साथ स्कूल की पढ़ाई भी मन लगाकर करता था। चाय की दुकान पर मेहनत से कमाया उसका पैसा स्कूल की फीस में चला जाता था। बातों ही बातों में एक दिन उसकी राम कहानी सुनने का अवसर मिला था। उसने बताया था–''मैं अपने घर से भागकर यहाँ आया हूँ।'' यह पूछने पर कि तुम घर से क्यों भागे, मनोहर ने जो कुछ बताया था, वह एक अमिट छाप की तरह मेरे हृदय में अंकित हो गया –

''बाबूजी! अब उस घर में मेरा क्या रह गया था, जो मैं वहाँ रहता।''

''तुम कहाँ के रहने वाले हो ?''

''राजस्थान में डूँगरपुर के पास एक छोटे–से गाँव का।''

''तुम्हारे माता–पिता कहाँ हैं ?''

''एक माँ ही तो थी, मर गई।''

''कब, कैसे ?''

''बाबूजी। तब मैं कोई दो बरस का था। बड़ी प्यारी थी मेरी माँ। बहुत प्यार करती थी मुझे। बीमार हो गई थी बेचारी। दवा के पैसे नहीं थे हमारे पास। बस, बिना किसी दवाई के एक दिन मुझे छोड़ कर चली गई।''

आज युवक मनोहर को देखकर मुझे बचपन का वह मनोहर याद आ गया, जो माँ की बात करते हुए फूट–फूट कर रो पड़ा था।

''और घर में कौन–कौन हैं?'' सुनकर उस दिन मनोहर के चेहरे पर कड़वाहट–सी आ गई थी। ''वे तो उसी दिन मुझे छोड़कर चले गए, जिस दिन माँ मुझे छोड़कर चली गई थी।'' यह कहकर बालक मनोहर रो पड़ा था।

आज भी मैं वे पल भूल नहीं पाया, जब बालक ने टूटे–फूटे शब्दों में अपनी कहानी बयान की थी। सब कुछ सुनने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि मातृ–पितृ विहीन उस बालक का बचपन संघर्ष से भरा हुआ था। अकेला बच्चा। अपना कहने वाला कोई नहीं। जो कुछ करना था, उसका अपना निर्णय था।

इसीलिए पाँच वर्ष का होते–होते मनोहर बड़ा मेहनती बालक बन गया था।

मुझे आज भी याद है, उस दिन बहुत तेज सर्दी थी। शाम होते–होते बाजार सूने हो गए थे। दिन भर रजाई में दुबके रहने के बाद इच्छा हो आई, टहलने की। सर्दी से बचाव के लिए ओवरकोट पहना। न जाने क्यों कदम मनोहर के घर की ओर चल पड़े।

क्या मनोहर का वह घर सचमुच का घर था? चाय के ठेले के सामने दुछत्ती के नीचे कोने पर दीए की लौ में स्कूल के सबक को याद करता मनोहर दूर से ही दिखाई दे गया। श्रमसिक्त चेहरे पर थकान स्पष्ट नज़र आ रही थी, लेकिन आँखों में सुनहरे भविष्य का सपना चमक रहा था।

''मनोहर क्या हो रहा है?'' मेरी आवाज़ सुनते ही मनोहर उठ खड़ा हुआ। शरीर पर सर्दी से बचाव का कोई उपाय न देख मैं विचलित हो उठा। मनोहर ने शायद मेरे मन की थाह ले ली। बोला–''आज सर्दी थोड़ी कम है, बाबूजी! फिर यह कंबल भी तो है मेरे पास। आप चिंता न करें।''

मैंने देखा, मनोहर के पास एक फटा कंबल था। अभी वह बिछा हुआ था। अधिक जरूरत हुई तो उसी को ओढ़कर सो रहेगा मनोहर।

मैंने कहा– ''मनोहर! आगे चलकर तुम क्या बनना चाहोगे?'' मनोहर बड़े विश्वास के साथ बोला, ''बाबूजी ! मैं पढ़–लिखकर बहुत कुछ बनना चाहता हूँ। अभी मैं चाय के ठेले पर थोड़ी बहुत मेहनत करता हूँ। जेब खर्च के लिए मुझे मेरे मालिक पर्याप्त रुपया देते हैं। वे मेरे लिए पिता तुल्य हैं। मुझे उनका बड़ा आसरा है। उनके दिए गए रुपयों में से स्कूल की पढ़ाई के लिए पैसा बचाने के बाद जो कुछ बचता है, वह बचत के रूप में इस डिब्बे में बंद है, बाबूजी।''

मनोहर की गुल्लख देखकर मैं गद्‌गद् हो उठा। बालक का संकल्प कितना दृढ़ है? हठात् मेरे मुँह से आशीर्वाद के ये शब्द फूट पड़े – ''बेटा ! तुम्हारी मेहनत अवश्य एक दिन रंग लाएगी।''

अचानक यादों का सिलसिला रुका। युवक मनोहर कह रहा था – ''बाबूजी! उस रात आपके दिए गए आशीर्वाद का ही फल है कि आज मेरा स्वयं का चाय का केबिन है। पिता के समान मेरे मालिक मरते समय यह छोटी–सी जगह मेरे नाम कर गए। बचत के रुपयों से ही धीरे–धीरे यह स्थान रहने लायक बना लिया, केबिन भी तैयार कर लिया।

मनोहर के चेहरे पर अपार संतोष, कृतज्ञता और आत्मविश्वास तीनों एक साथ दिखाई दिए। बीते हुए समय के प्रति कृतज्ञता, वर्तमान के प्रति अपार संतोष और भविष्य के प्रति आशावादिता ही तो थी यह।

मुझे लगा, एक मनोहर ही नहीं! ऐसे अनेक मनोहर देश के कोने–कोने में अपने जीवन को सँवारने में लगे हैं। मनोहर मेरे लिए भारत के सुखद भविष्य का पर्याय बन गया है।

डॉ0 राकेश तैलंग

शब्दार्थ

हठात्	–	बलपूर्वक	घनीभूत	–	जो घना हो, गहरा
श्रमसिक्त	–	श्रम से सींचा हुआ	कृतज्ञता	–	कृतज्ञ होने का भाव
सभ्रम	–	संशय सहित	बाध्यता	–	विवशता, मजबूरी
संकल्प	–	दृढ़ निश्चय	मासूमियत	–	मासूम होने का भाव

मशगूल	–	लगा हुआ, व्यस्त	विहीन	–	रहित
पुश्तैनी	–	जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो, पैतृक			

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

मातृ–पितृ, श्रमसिक्त, कृतज्ञता, मशगूल, दुछत्ती

सोचें और बताएँ

1. लेखक ने जब बालक मनोहर से उसके माता–पिता के बारे में पूछा तो उसने क्या उत्तर दिया?
2. मनोहर का बचपन कैसे बीता ?
3. लेखक का मनोहर से प्रथम परिचय कैसे हुआ ?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लेखक बिलासपुर छोड़कर जनकनगर में बस गया था–

   (क) अपने नये घर में (ख) अपने पुश्तैनी घर में

   (ग) डाक बंगले में (घ) किले में ( )

2. मनोहर राजस्थान के ज़िले का रहने वाला था–

   (क) अजमेर का (ख) उदयपुर का

   (ग) डूँगरपुर का (घ) बाड़मेर का ( )

3. लेखक की निगाहें बस्ती के बीच ढूँढ़ रही थीं–

   (क) चाय के ठेले को (ख) फल की दुकान को

   (ग) सब्जी के ठेले को (घ) मिठाई की दुकान को ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मनोहर ने अपना जीवन चलाने के लिए क्या किया?
2. मनोहर की माँ की मृत्यु का क्या कारण था?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मनोहर पाँच वर्ष का होते–होते कैसा बालक बन गया था ?
2. बालक मनोहर अपने स्कूल की फीस की व्यवस्था कैसे करता था ?
3. मनोहर ने किसे अपना पिता तुल्य बताया ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. ''बाबूजी उस रात आपके दिए गए आशीर्वाद का ही फल है'' मनोहर ने किस रात की घटना की बात कही है? विस्तार से बताइए ?
2. लेखक वर्षों बाद बिलासपुर आने पर मनोहर से मिलने के लिए क्यों उत्सुक था ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और जानिए

मातृ	–	माता	शौक	–	आदत
मात्र	–	केवल	शोक	–	दुःख
कूल	–	किनारा	अंश	–	भाग
कुल	–	वंश	अंस	–	कंधा

2. अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद किए जाते हैं

1. एकार्थी शब्द; जैसे–गाय,घर
2. अनेकार्थी शब्द; जैसे –कनक–धतूरा व सोना।
3. पर्यायवाची शब्द; जैसे –बादल, नीरद, जलद।
4. विलोम शब्द; जैसे –रात–दिन।
5. युग्म शब्द; जैसे –दिन व दीन

पाठ से आगे

1. अगर आप बालक मनोहर की जगह होते तो क्या करते ?
2. यदि लेखक वापस बिलासपुर आने पर मनोहर से नहीं मिलता तो क्या होता ?

यह भी करें

अगर आपके आस–पास कोई ऐसा बालक हो जिसके परिवार में कोई नहीं है। आप उसकी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं।

यह भी जानें

हमारे देश में बाल मजदूरी को कानूनन अपराध माना जाता है। भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा अपने–अपने स्तर पर बाल मजदूरी रोकने के उपाय किए जा रहे हैं। ऐसे बालक जो बेसहारा हैं उनके लिए रहने–पढ़ने की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है। समाज कल्याण विभाग ऐसे बच्चों के लिए आवास व शिक्षा का प्रबंध करता है। स्वयंसेवी संगठन भी ऐसे जरूरतमंद बच्चों की मदद करते हैं। हमें भी ऐसे बच्चों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

Whatever you have, spent less.

जितना भी तुम्हारे पास है, उससे कम खर्च करें।

केवल पढ़ने के लिए

ऐसा मेरा देश हो

लहराती हरियाली हो, महकाता मधुरेश हो।
नई जिन्दगी झूमे जिसमें, ऐसा मेरा देश हो।।
हर घर में हो नया तराना, हर घर में हो गीत नया।
मेहनत की ममता में डूबा, जागे फिर संगीत नया।
नए रंग हों, नव उमंग हो, नई बात हो, नए ढंग हो।
नव विकास की नई किरण में, तम का कहीं न लेश हो।।
ऐसा मेरा देश हो।

पर्वत को भी तोड़ चले जो, टकराए तूफान से।
कोटि चरण प्रस्थान करें, नव पौरुष से अभिमान से।।
गगन गहरता गूँजे गान, जागे सारा हिंदुस्तान।
डगर–डगर से नगर–नगर से, निविड़ तमिश्रा शेष हो।।
ऐसा मेरा देश हो।

मिट्टी का मोती मुस्काए, खेतों में खलिहानों में।
अपनेपन का दीप नया फिर, जागे नए किसानों में।।
अपनी धरती हो निर्धन की, पूरी हो आशा जन–जन की।
कोई रहे न भूखा नंगा, ना कोई दरवेश हो।।
ऐसा मेरा देश हो।

श्री जयशिव व्यास श्रीमाली